अणुविभा जयपुर केन्द्र,

आचार्य तुलसी मार्ग, (गौरव टॉवर के सामने) मालवीय नगर, जयपुर-17

फोन : 91-141 **2724490**,

प्रेस विज्ञप्ति

''अहिंसा के लिए वितरण और उपार्जन पर नियन्त्रण जरूरी''

मुनिश्रीविनयकुमारजी 'आलोक'

जयपुर, 02 अक्टूबर 09

भारतीय दर्शन में अहिंसा को सर्वोपरि स्थान मिला है। हिंसा क्यों पैदा होती है? इस पर चिन्तन होना आवश्यक है हिंसा का मूल कारण है परिग्रह। जब तक समाजवादी अर्थव्यवस्था पर चिन्तन नहीं किया जायेगा तब तक हिंसा पर नियन्त्रण करना कठिन है। वितरण और उर्पाजन व्यवस्था पर लगाम होनी चाहिए, जिससे हिंसा पर काबू किया जा सके। अर्न्तराष्ट्रीय स्तर देखें कुछ देशों ने अणुबम का भण्डार इक्ट्ठा कर लिया अब वे ही देश दूसरे देशों से अणुबम पर नियन्त्रण करने की बात कहते है क्या यह संभव होगा। जब तक कथनी और करनी एक नहीं होगी तब तक हिंसा पर रोक नहीं लगेगी। ये :ाब्द मुनिश्री विनयकुमारजी 'आलोक' ने अणुविभा केन्द्र में अहिंसा दिवस पर समायोजित ''अहिंसा आचार और व्यवहार'' संगोश्ठी को सम्बोधित करते हुए अणुविभा केन्द्र मालवीय नगर में कहे। इस संगोश्ठि में नरेगा कमि-नर श्री राजेन्द्र भाणावत मुख्य अतिथि थे, पूर्व राज्यपाल जस्टिस नवरंग लाल टिबरेवाल ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की, राजस्थान चैम्बर्स ऑफ कॉमर्स के महामंत्री श्री के.एल.जैन विशिश्ठ अतिथि के रूप में उपस्थित थे। जस्टिस पानाचन्द जैन, शिक्षा सचिव श्री आर.पी.जैन, प्रो. मानचन्द खंडेला, महामहोपाध्याय श्री विनयसागरजी, इन्कमटैक्स के संयुक्त कमिश्नर श्री धीरज कुमार जैन, पूर्व न्यायाधीश उमराव सिंह जी मेहता आदि विद्वान लोग उपस्थित थे।

मुनिश्री ने आगे कहा :- शांति और अहिंसा एक दूसरे के पूरब है शांति के अभाव में अहिंसा और अहिंसा के न रहते शांति का वरतण करना मुमकीन नहीं है। अहिंसा साधन है हिंसा साध्य है। यदि शांति को पाना है तो अहिंसा को स्वीकार करना होगा। अहिंसा केवल प्राण विच्छेद तक ही सिमित नहीं है। हिंसा मन के साथ जुड़ी हुई है। मन की हिंसा कई बार ज्यादा बंधन का कारण बन सकती है। मुनिश्री ने वर्तमान के जैन समाज की चर्चा करते हुए कहा जैन समाज का भी रास्ता अन्य समाज के लोगो की तरह बनता जा रहा है। व्यक्ति पहले अपने जीवन से अहिंसक बने तभी अहिंसक कहलाने का अधिकारी बन सकेगे। देखा-देखी छोड़कर स्वयं के अस्तित्व को पहचाने तभी जैन कहलाने के अधिकारी बन सकें।

नरेगा कमि-नर श्री राजेन्द्र भाणावत मुख्य अतिथि पद से बोलेते हुए कहा :- हमें अहिंसा को गहराई से समझना होगा दूसरों को नहीं स्वयं को बदलना होगा। छालावा नहीं वास्तविकता को स्वीकार करना होगा। बाहर और भीतर एक जैसा होना होगा तभी अहिंसा दिवस मनाना सार्थक बनेगा।

पूर्व राज्यपाल जस्टिस नवरंग लाल टिबरेवाल ने कहा :- आज समाज में उन लोगों का कब्जा है जो चरित्र से भ्रश्ट है। वे कहते कुछ और है करते कुछ और है। मनुश्य आज हिंसक, स्वार्थी और लोभी हो गया है। इन अवगुणों का खातमा करना होगा तभी अहिंसक समाज की सरंचना हो सकेगी।

राजस्थान चैम्बर्स ऑफ कॉमर्स के महामंत्री श्री के.एल.जैन ने कहा :- समाज और शासन के वर्तमान ढांचें में चलते हुए क्या अहिंसा सभवं हो पायेगी। जो व्यवस्था अपने ही बोझ से चरमरा रही है जिसे खड़ा करने के लिए एक के बाद एक अनैतिक तरीके अपनाए जाते हों वे किसी दिन भुरभुराकर ढहेगी इसमें सदेंह नहीं है। व्यक्ति ने अपनी सुरक्षा के हिंसक साधनों का विस्तर कर रखा है ऐसी स्थिति में क्या अहिंसक सार्थक स्वरूप ग्रहण कर सकेगी।

जस्टिस पाना चन्द जैन ने कहा :- गांधी आज ट्रैडमार्क बन गया है जब तक हम इस ट्रैड मार्क को नहीं बदलेंगे तब तक नकली गांधी पैदा होते रहेंगे।

प्रो. श्री मानचन्द खण्डेला ने कहा :- व्यक्ति से परिवर्तन की :ाुरूआत होनी चाहिए तभी समाज में परिवर्तन आयेगा।

श्री पन्नालाल पुगलिया ने कहा :- मुनिश्री का सर्म्पक विशालतम है और हर कार्यक्रम में ऐसे बुद्धिजीवी इक्ट्ठे होते है जिससे हमें नई प्रेरणा और ऊर्जा प्राप्त होती है। कार्यक्रम का संयोजन श्री गौरव मांडोत ने किया। संघ की सुप्रसिद्ध गायिका श्रीमती मीनाक्षी भुतोड़िया भी उपस्थित थी।

अणुविभा केन्द्र, जयपुर